॥ ओ३म्॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

अनमोल वचन

यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु।

हे प्रभु! जिस शुभ इच्छा से हम तेरा आह्वान करें, वह हमारी पूर्ण हो।

वर्ष ३३, अंक ७ **एक प्रति : ३ रुपये**

सोमवार २३ नवम्बर, २००९ से २९ नवम्बर, २००९ तक

विक्रमी सम्वत् २०६६ दयानन्दाब्द : १८६

सृष्टि सम्वत् १९६०८५३११० वार्षिक : १५० रुपये

फैक्स : २३३४३७३७ ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

Website : www.delhisabha.com पृष्ठ सं १ से ८ तक

ओ३म्

आर्यसमाज के संस्थापक, अद्वितीय समाज सुधारक

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 125 वें निर्वाण वर्ष

के अवसर पर नियोजित एक वर्षीय कार्य योजना का

समापन समारोह

सोमवार, 30 नवम्बर, 2009 प्रातः 9:30 बजे

सीरीफोर्ट ऑडिटोरियम-1, खेलगांव, अगस्त क्रान्ति मार्ग, नई दिल्ली-49

-: मुख्य अतिथि :-

श्रीमती शीला दीक्षित जी, माननीया मुख्यमन्त्री, दिल्ली

वेदोद्धारक, सच्चे ईश्वर भक्त, तर्क व श्रद्धा से युक्त धर्म का सच्चा स्वरूप बताने वाले, राष्ट्रीय स्वाधीनता और समाज सुधार के प्रखर पुरोधा, नारी जाति के उद्धारक तथा मानवता के अनन्य मार्गदर्शक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 125वें निर्वाण वर्ष के अवसर पर नियोजित एक वर्षीय कार्यक्रम के समापन समारोह में आप सपरिवार, इष्टमित्रों सहित उत्साहपूर्वक पधारकर महर्षि के उपकारों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए उन्हें भावपूर्ण श्रद्धाञ्जली देवें तथा कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं।

-: निवेदक :-

महाशय धर्मपाल	रमाकान्त गोस्वामी	ब्र० राजसिंह आर्य	विनय आर्य	अनिल तनेजा
उपाध्यक्ष	संयोजक	प्रधान	महामन्त्री	कोषाध्यक्ष

महर्षि दयानन्द सरस्वती 125वां निर्वाण वर्ष आयोजन समिति दिल्ली

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15, हनुमान रोड, नई दिल्ली–110001

दूरभाष : 011-2336 0150, 46535465, 9958174441, 9212209044

ईमेल : aryasabha@yahoo.com • वेबसाईट : www.delhisabha.com

सुरक्षा कारणों से अपना स्थान 9:20 तक अवश्य ग्रहण कर लें। ब्रिफकेस और इलेक्ट्रोनिक सामान साथ न लाएं।

दर्शन व्याख्या - 21

न्यायदर्शन के अनुसार 'इन्द्रिय'

गतांक से आगे :–

'इन्द्रिय' एक है या अनेक, इस प्रश्न का समाधान करते हुए तथा पूर्वपक्ष के रूप में वादी की शंकाओं का निरसन करते हुए महर्षि गौतम ने लिखा है कि चूँकि इन्द्रियों के पाँच विषय– रूप, रस, गन्ध, स्पर्श और शब्द हैं, अतः उन्हें ग्रहण करने वाली ज्ञानेन्द्रियाँ भी पाँच ही हैं। रूप को ग्रहण करने वाले चक्षु, रस को ग्रहण करने वाली रसना, (जिह्वा) , गन्ध को ग्रहण करने वाली नासिका, स्पर्श को ग्रहण करने वाली त्वचा एवं शब्द को ग्रहण करने वाले श्रोत्र (कान) हैं– 'इन्द्रियार्थ–पंचत्वात्' (न्याय0 3–1–58)। केवल त्वचा को इन्द्रिय मानने का सूत्रकार ने अनेक युक्तियों से निषध किया है। यद्यपि पंचभूतों में से प्रत्येक का अपना–अपना प्रमुख गुण तो एक ही होता है, तथापि संसर्ग से उनमें कुछ अन्य गुणों का भी समावेश हो जाता है। इस सिद्धांत से गन्ध, रस, रूप, स्पर्श, पृथ्वी के ये चार; रस, रूप, और स्पर्श जल के ये तीन ; रूप और स्पर्श अग्नि के ये दो गुण हैं तथा वायु का स्पर्श और आकाश का शब्द ही एक मात्र गुण है, गन्धरसरूपस्पर्शशब्दानां स्पर्शपर्यन्ताः पृथिव्या अप्तेजोवायूनां पूर्व पूर्वमपोह्याकाशस्योत्तरः।' (न्याय0, 3–1–64एवं देखिए 3–1–67)

बुद्धि : प्रथम अध्याय में यह बताने के उपरान्त कि बुद्धि और ज्ञान पृथक पृथक नहीं, अपितु एक ही है (बुद्धिरूपलब्धिर्ज्ञानमित्यर्थान्तरम्) न्याय0, 1–1–15) महर्षि गौतम ने तृतीय अध्याय के द्वितीय आह्निक के प्रारम्भ में यह प्रश्न उठाया है कि बुद्धि नित्य है या अनित्य ? पूर्वपक्ष के रूप में इस संशय को उपस्थित करते हुए न्यायदर्शनकार ने लिखा है कि कर्म और आकाश के समान बुद्धि भी स्पर्शत्व से रहित है– कर्माकाशसाधर्म्यात् संशयः (न्याय0, 3–2–1) और इनमें से कर्म अनित्य एवं आकाश नित्य है, अतः यह शंका स्वाभाविक ही है कि बुद्धि कर्म के समान अनित्य है या आकाश के समान नित्य ? इस शंका का एक अन्य कारण यह भी है शास्त्र में कही तो बुद्धि को आत्मा का गुण बतलाया गया है, जिससे यह लगता है कि बुद्धि नित्य है और कहीं यह भी लिखा है कि इन्द्रिय और अर्थके सान्निकर्ष (सम्बन्ध) से उत्पन्न ज्ञान प्रत्यक्ष है जिससे बुद्धि (ज्ञान) की अनित्यता सिद्ध होती है (इन्द्रियार्थसन्निकर्षोत्पन्नं ज्ञानम...प्रत्यक्षम् '(न्याय0 1–1–4) क्योंकि कोई भी ज्ञान चिरकाल तक स्मृति में नहीं बना रहता, अनभ्यासादि से वह विस्मृति के गर्त में चला जाता है।

– डॉ. सुन्दर लाल कथूरिया (डी.लिट्) ,
बी–3/79, जनकपुरी, न.दिल्ली–110058

क्रमशः

The Sixteen Rituals of Aaryas

Continued from Last Issue.

5. Naamakaran sanskaar (The ritual of giving the child a name)
6. Nishkraman sanskaar (The ritual of taking an infant out of the house for the first time)
7. Annapraashan sanskaar (The ritual of giving solid grain to an infant for the first time)
8. Choodaakarm sanskaar (The ritual of shaving the child's head for the first time)
9. Karnavedh sanskaar (The ritual of piercing the ear)
10. Upanayan sanskaar (The ritual of investiture with the sacred thread)
11. Vedaarambh sanskaar (The ritual of initiating Vedic Study)
12. Samaavartan sanskaar (The ritual of completion of Education)
13. Vivaah sanskaar (The wedding ritual)
14. Vaanaprasth sanskaar (The ritual of Ieaving household for a life of austerity)
15. Sanyaas san skaar (The ritual of renunciation)
16. Antyeshti sanskaar (The last funeral rites)

1. Garbhaadhaan sanskaar (The ritual of conception)

In Vedic culture, conception is considered to be a pure, sacred rite to beckon a new soul that possesses supreme qualities and characteristics. Just like a growing tree or a farm requires fertile land, seeds, manure, water, air and special protection, in the same manner, summoning a healthy soul having fine impressions on it requires preparation on the part of parents even prior to conception. According to Aayurveda, for conception, the minimum age of the man should be 25 years and that of the woman should be 18 years. It is considered even better if the age is even higher because prior to age 25, a man's semen and prior to age 18, a woman's ova and uterus, are underdeveloped. In this immature state, conception cannot lead to the production of a superior offspring. By Vedic belief, a couple can willfully (obeying the directions given in the scriptures) acquire a strong, beautiful, intellectual, dignified, dispassionate offspring possessed with good impressions. For this, it is necessary to follow certain pre-requisites like continence, healthy and pure diet, regular study of scriptures and of self, excellent company, a strict routine, contemplation etc. Scriptures based on the subject of Aayurveda contain a detailed description of these things. One should have a look at them.

To be continued....

गतांक से आगे :–

देववाणी : संस्कृत

संस्कृतविकासे बाधानां परिहाराणाञ्च चिन्तनम्

ये छात्राः विज्ञानविषयं पठन्ति ते संस्कृतं कथं पठेयुः इति तर्कः प्राचार्याणाम्। परन्तु विज्ञानविषयेऽपि केचन छात्राः गणितं परित्यज्य, अपरे च जीवविज्ञानं परित्यज्य तत्सथाने संस्कृतं सुखमध्येतुं शक्नुवन्ति। एसदतिरिक्तञ्चास्माकं विद्यालेषु प्रायः नवम दशम कक्षास्वपि संस्कृताध्ययनमनिवार्यं नास्ति ऐच्छिकविषयेन छात्राः गृह्णन्ति।

अतोऽहं मन्ये यत् सर्वेषु विद्यालयेषु नवमकक्षातः द्वादशकक्षापर्यन्तं संस्कृताध्ययनमनिवार्यं भवेत् प्रवेशवेलायाञ्च सम्बोधनीयाः छात्रा अभिभावकाश्च यदत्र संस्कृताध्यापनस्य व्यवस्था वर्त्तते, न केवलं व्यवस्था एव वर्तते अपित्वत्र एक भाषाणरूपेण वऐच्छिकविषयरूपेण वा संस्कृता–ध्ययनमनिवार्यमस्ति। अनेन वेदज्ञानं प्रति स्वसंस्कृतिं प्रति च छात्राणां सम्बद्धता वर्धिष्यते आगामिजीवने च न तु अनेन कोऽपि बाधा उपस्थास्यति अपितु ज्ञानक्षितिजविस्तारोऽपि भविष्यति। एतदप्यत्र स्मर्त्तव्यं यदखिलभारतीयप्रशासनिकसेवापरीक्षायामपि संस्कृतमेकविषयरूपेण स्वीकृतमस्ति। वयं सर्वेषां छात्राणां संस्कृतेनाधिकं हितमेव कामयामहे।

तथा च संस्कृतभाषायाः अध्ययनस्य आप्रथकमक्षायाः द्वादशकक्षापर्यन्तं व्यवस्था कृत्वा वयं राजनेतृणां, विदुषां, पाश्चात्यविपश्चितां कथितं तद्वचनं पूर्णं कर्तुं पारयिष्यामः।

"भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतं संस्कृतिस्तथा"

बहुषु राज्येषु विविधानां राजनीतिदलानां सर्वकाराः प्रचलन्ति परन्तु केनापि मुख्यमन्त्रिणा सर्वोच्चन्यायालयस्य निर्णयम् आधारीकृत्य अनिवार्यरूपेणाध्ययनस्य व्यवस्था न कृता,परञ्च उत्तरप्रदेशे यदा पूर्वं श्री मुलायम सिंहेन मुख्यमन्त्रित्वेन पञ्चपञ्चाशत् सहस्त्रम् उर्दू–अध्यापकाः नियुक्तीकृताः तथा उर्दूभाषां द्वितीयराजभाषां कर्तुं विधेयकमपि आनीतं परञ्च ये राजनेतारः संस्कृतस्य संस्कृतेः च सर्वाधिकं वार्तां कुर्वन्ति ते संस्कृतभाषायै किमपि कर्त्तुं न शक्नुवन्ति, कीदृशी विडम्बना अस्माकं देशे प्रचलति, सर्वत्र दृग्गोचरी भवति। अस्मासु नास्ति साहसं, नास्ति भाषां प्रति भक्तिः, नास्ति प्रीतिः नास्ति विश्वासः,नास्ति काचितद्–दृढ़ इच्छाशक्तिः एवं प्रतिभाति।

– डॉ. जितेन्द्र कुमारः, प्राध्यापक,
अजमेरस्थ दयानन्द महाविद्यालयीयः, अजमेर (राजस्थान)

बोध कथा

८४ लाख योनियों का चक्र

– महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती

एक था बेचारा सूरदास। ऐसे दुर्ग में फंस गया, जिसमें भयानक अग्नि जल रही थी। कितने ही भयानक पशु वहां चिल्ला रहे थे। एक और यह झुलसा देने वाली गर्मी, दूसरी ओर इन भयानक पशुओं की गर्जना और दहाड़। बेचारे सूरदास ने प्रयत्न किया कि दुर्ग से बाहर निकले, परन्तु जिधर भी वह जाता, उधर का द्वार उसे बन्द मिलता। 84 लाख द्वार थे, परन्तु बेचारे सूरदास को एक भी द्वार खुला नहीं मिला। भय और कष्ट से घबरा गया और चिल्लाकर बोला – 'अरे, कोई मुझ पर दया करके बताओ कि इस दुर्ग में कोई द्वार खुला भी है या नहीं?'

एक और व्यक्ति ने उसकी यह अवस्था देखी। उसके पास जाकर कहा – 'सूरदास! 84 लाख द्वार हैं यहां, केवल एक खुला रहता है।'

सूरदास ने विनयपूर्वक पूछा – ' कौन–सा द्वार?'

उस व्यक्ति ने कहा – ' वह सामने वाली दीवार में है, परन्तु बहुत दूर। तुझे दिखाई देता नहीं। इधर से उस द्वार तक पहुंच न पायेगा। मेरे साथ आ। मैं तेरा हाथ इस दीवार पर रख देता हूं। इसको छूता हुआ चला जा। जहां खुला द्वार आएगा, वहां से बाहर चले जाना।'

उस व्यक्ति ने सूरदास का हाथ रख दिया दीवार पर। सूरदास चलने लगा। परन्तु उसे खुजली की बीमारी थी। बार–बार खुजली उठती। वह खुजलाता और चलता जाता था। जब वह खुले द्वार के पास पहुंचा तो पुनः खुजली जाग उठी। दीवार से हाथ उठाकर वह खुजाता हुआ बढ़ गया। फिर 84 लाख द्वारों के चक्र में पड़ गया।

आपको इस बेचारे सूरदास पर दया आती है। मन–ही–मन आप सोचते हैं, कितना अभागा है वह! परन्तु सोचो मेरे भाई! क्या आप स्वयं पर दया नहीं कर सकते? अरे, हम भी तो उस सूरदास की भांति हैं। 84 लाख योनियों के चक्र में पड़े हैं। 84 लाख द्वार बन्द हैं यहां। दुःखों–कष्टों की अग्नि जल रही है यहां। पाप–ताप के पशु दहाड़ रहे हैं। केवल एक द्वार खुला है – यह मानव योनि। किसी ज्ञानी ने कृपा करके कहा – 'इस द्वार से बाहर निकल जाओ।' परन्तु हाय रे अभागे! इस खुले द्वार के समीप पहुंचकर तेरे अन्दर तृष्णा, विषय–वासना की खुजली जाग उठती है। दीवार से हाथ उठाकर तू खुजलाने लगता है। खुजलाता हुआ आगे बढ़ जाता है और फिर वही 84 लाख का चक्कर!

उस बेचारे अन्धे पर दया करते हो, अपने आप पर नहीं कर सकते? कब तक भटकते रहोगे इस दुर्ग में, जहां दुःख हैं– कष्ट ही कष्ट? यह मानव शरीर तुम्हारे समक्ष है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की खुजली में फंस गए तो द्वार फिर निकल जाएगा और यह निकल गया तो 'महती विनष्टि' – बहुत बड़ा विनाश होगा।

"ओ३म्" की ध्वनि में छिपी चमत्कारी शक्ति

ओ३म की ध्वनि का सभी मत सम्प्रदायों में महत्त्व है। हमारे सभी वेद मंत्रों का उच्चरण भी 'ओ३म्'' से ही प्रारम्भ होता है जो ईश्वरीय शक्ति की पहचान है। परमात्मा का निज नाम 'ओ३म्' है। अंग्रेजी में भी ईश्वर के लिए Omnipresent सर्वव्यापक शब्द का प्रयोग होता है यही सृष्टि का आधार है।

यह सिर्फ आस्था नहीं, इसका वैज्ञानिक आधार भी है। खगोल वैज्ञानिकों ने प्रमाणित किया है कि हमारे अन्तरिक्ष में पृथ्वी मण्डल, सौरमण्डल, सभी ग्रह मण्डल तथा अनेक आकाश गंगाएं लगातार ब्रह्मण्ड का चक्कर लगा रही है। यह सभी आकाशीय पिण्ड कई हजार मील प्रति सैकेण्ड की गति से अनन्त की ओर भागे जा रहे हैं जिससे लगातार एक कम्पन्न, एक ध्वनि अथवा शोर उत्पन्न हो रहा है इसी को अथवा इसी ध्वनि को हमारे ऋषि महर्षियों ने अपनी ध्यानावस्था में सुना। इसे ब्रह्मनाद कहा यानि अंतरिक्ष में होने वाला मधुर गीत 'ओ३म्' ही अनादि काल से अनन्त काल तक ब्रह्माण्ड में व्याप्त है। ओ३म् की ध्वनि या नाद ब्रह्माण्ड में प्राकृतिक ऊर्जा के रूप में फैला हुआ है। जब हम अपने मुख से एक ही साँस में ओ३म् का उच्चारण करते हैं तो बाह्य ऊर्जा प्राकृतिक ऊर्जा के समान होने पर उसकी शक्ति कई गुणा हो जाती है जिससे हमारे संपूर्ण शरीर में पड़ी मृतक कोशिकाएं भी जीवित हो जाती हैं और अर्थात् क्रियाशील हो जाती हैं। उदाहरणार्थ डॉ. एच. आर. नगेन्द्र के अनुसार यदि ओ३म् का उच्चारण मस्तिष्क (Mind) ध्वनि (Sound) अनुनाद (Resonance) तकनीक (Technique) से किया जाए तो मानव शरीर को अनेकानेक लाभ होते हैं और वह असीम सुख, शान्ति व आनन्द की अनुभूति करता है।

ओ३म् शब्द तीन अक्षरों एवं दो मात्राओं से मिलकर बना है जो वर्णमाला (क ख ग ....) के समस्त अक्षरों में व्याप्त है। पहला अक्षर है 'अ' जो कंठ से निकलता है। दूसरा अक्षर 'उ' जो हृदय को प्रभावित करता है। तीसरा अक्षर है 'म' जो नाभि में कम्पन करता है। इस सर्वव्यापक पवित्र ध्वनि के गुंजन का हमारे शरी की नस–नाड़ियों पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है विशेषकर मस्तिष्क मण्डल, हृदय व नाभि केन्द्र में कम्पन्न होने से उनमें से जहरीली वायु तथा व्याप्त अवरोध दूर होते हैं जिससे हमारी समस्त नाड़ियाँ शुद्ध हो जाती हैं। जिससे हमारा (Aura) आभामण्डल शुद्ध हो जाता है और हमारे अन्दर छिपी हुई सूक्ष्म शक्तियाँ जागृत होती हैं व आत्म अनुभूति होती है।

किसी भी ध्वनि का प्रभाव तभी उत्पन्न होता है जब उसे विशेष लय बद्धता व श्रद्धा के साथ व्यक्त किया जाए। ओ३म् ध्वनि करते हुए स्वर की मधुरता तथा उच्चारण को शुद्धता पर अवश्य ध्यान देना चाहिए। 'ओ३म्' शब्द का उच्चरण करें तब सब ओर से वृत्तियों को हटाकर एकाग्रचित होकर के उस प्रभु का प्रेम, श्रद्धा और दृढ़ विश्वास से ध्यान करें। ऐसी भावना बनाए कि वही हमारा सच्चा पिता, माता, भाई, बन्धु हमारा सर्वस्व हमारे जीवन का आधार है। (जिसका निज और मुख्य नाम 'ओ३म्' है) वह जो करता है, अच्छा ही करता है हमारा सदैव भला ही करता है, दु:ख द्वारा भी हमारे पाप कर्मों का शमन करता है व हमें पाप के बोझ से हल्का करता है। इसलिए दु:ख आने पर भी उसका ही धन्यवाद करें। क्योंकि सृष्टिकर्त्ता के अनेक नामों में 'ओ३म्' का सर्वोत्तम महत्त्व है। इसी महत्ता को देखते हुए व अनुभव करते हुए ऋषियों ने चारो वेदों के 20389 मंत्रों में प्रत्येक को ओ३म् से प्रारम्भ किया। इसी आधार पर 'ओ३म क्रतो स्मर' का आदेश यजुर्वेद के 40वें अध्याय के 15वें मंत्र में दिया गया है।

ओ३म् के सम्बन्ध में यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि क्या ओ३म् शब्द की महिमा का कोई वैज्ञानिक आधार है? क्या इसके उच्चारण से इस संसार में भी कुछ लाभ है? इस सम्बन्ध में ब्रिटेन के एक साईंटिस्ट जर्नल ने शोध परिणाम बताए हैं जो यहाँ प्रस्तुत हैं 'रिसर्च एण्ड इंस्टीट्यूट ऑफ न्यूरो साइंस' के प्रमुख प्रोफेसर जे. मार्गन और उनके सहयोगियों ने सात वर्ष तक 'ओ३म्' के प्रभावों का अध्ययन किया। इस दौरान उन्होंने मस्तिष्क और हृदय की विभिन्न बीमारियों से पीड़ित 2500 पुरुषों और 2000 महिलाओं का परीक्षण किया। इन सारे मरीजों को केवल वे ही दवाईयाँ दी गईं जो उनका जीवन बचाने के लिए आवश्यक थीं। शेष सब बन्द कर दी गई। सुबह 6 से 7 बजे तक यानि कि एक घण्टा इन लोगों को साफ, स्वच्छ, खुले वातावरण में योग्य शिक्षकों द्वारा 'ओ३म्' का जप कराया गया। इन दिनों उन्हें विभिन्न ध्वनियों और आवृतियों में ओ३म् का जप कराया गया। हर तीन माह में हृदय, मस्तिष्क के अलावा पूरे शरीर का स्कैन कराया गया। चार साल तक ऐसा करने के बाद जो रिपोर्ट सामने आई व आश्चर्यजनक थी। 70 प्रतिशत पुरुष और 82 प्रतिशत महिलाओं से 'ओ३म्' जप शुरू करने के पहले बीमारियों की जो स्थिति थी उसमें 90 प्रतिशत कमी दर्ज की गई। कुछ लोगों पर मात्र 10 प्रतिशत असर ही हुआ। इसका कारण प्रो. मागन ने बताया कि उनकी बीमारी अन्तिम अवस्था में पहुंच चुकी थी। इस परिणाम से यह परिणाम प्राप्त हुआ कि नशे से मुक्ति भी 'ओ३म्' के जप से प्राप्त की जा सकती है। इस का लाभ उठाकर जीवन भर स्वस्थ रहा जा सकता है।

कैसे हुए लाभ – प्रोफेसर मार्गन कहते हैं कि विभिन्न आवृत्तियों (तरंगों) और 'ओ३म्' ध्वनि के उतार चढ़ाव से पैदा होने वाली कम्पन्न क्रिया से मृत कोशिकाओं का पुनर्निर्माण हो जाता है। रक्त विकार होने ही नहीं पाता। मस्तिष्क से लेकर नाक, गला, हृदय, पेट और पैर तक तीव्र तरंगों का संचार होता है। रक्त विकार दूर होता है और स्फूर्ति बनी रहती है।

अभी हाल ही में हारवर्ड विश्व विद्यालय के प्रोफेसर हरबर्ट बेन्सन ने अपने लम्बे समय के शोध कार्य के बाद 'ओ३म्' के वैज्ञानिक आधार पर प्रकाश डाला है। थोड़ी प्रार्थना और ओ३म् शब्द के उच्चारण से जानलेवा बीमारी एड्स के लक्षणों से राहत मिलती है तथा बांझपन के उपचार में दवा का काम करता है। इसके अलावा आप स्वयं 'ओ३म्' जप करके ओ३म् जप करके ओ३म् ध्वनि के परिणाम देख सकते है। इसके जप से सभी रोगों में लाभ व दुष्कर्मों के संस्कारों का शमन होता है। अत: ओ३म् की चमत्कारिक ध्वनि का उच्चारण (जाप) यदि मनुष्य अटूट श्रद्धा व पूर्ण विश्वास के साथ करे तो अपने लक्ष्य को प्राप्त कर जीवन को सार्थक कर सकता है।

– गंगा शरण आर्य
सैनी मोहल्ला, ग्राम शाहबाद मोहम्मदपुर
नई दिल्ली – 61 मो. : 9871644195

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
कार्य एवं गतिविधियों को जानने के लिए लॉगऑन करें
www.delhisabha.com

सार्वदेशिक सभा के तत्वाधान में
अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन
आज ही लॉगऑन करें
www.aryamahasammelan.com

ब्रह्म–सूत्र

द्वितीय अध्याय-तृतीय पाद (8)

एतेन मातरिश्वा व्याख्यात: ।। ८ ।।

अर्थ – (एतेन) इससे (अर्थात्– आकाश के बारे में किए गए विवेचन से (मातरिश्वा) वायु (के सम्बन्ध में भी) (व्याख्यात:) व्याख्या हो गई।

भावार्थ – इस सूत्र के द्वारा सूत्रकार यह कहना चाहता है कि पूर्व सूत्र में आकाश के वर्णन की तरह वायु का वर्णन भी हो गया। क्योंकि जैसे आकाश प्रकृति का विकार है और बह्म के द्वारा उत्पन्न किया है उसी प्रकार ब्रह्म ने वायु को भी उत्पन्न किया गया है। बृहदारण्यक उपनिषद् (२/३/३) में आकाश और वायु को अमृत कहा है। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि ये दोनों नित्य पदार्थ हैं। परन्तु मुंडक उपनिषद् (२/१/३) और तैत्तिरीय उपनिषद् (२/२) में वायु की उत्पत्ति का स्पष्ट उल्लेख है। इसलिए इसका यह अभिप्राय नहीं है कि ये नित्य पदार्थ हैं। इसका केवल यही मतलब है कि ये अन्य महाभूतों की अपेक्षा अधिक स्थायी हैं। अन्य महाभूतों की तरह इन पर खण्ड प्रलय का प्रभाव नहीं होता। केवल महाप्रलय के समय ही ये अपनी कारण अवस्था में आते है। अत: इसमें किसी प्रकार का शास्त्रों में विरोध नहीं है।

इसलिए सूत्रकार ने कहा कि आकाश की व्याख्या से वायु के बारे में भी व्याख्या समझ लेनी चाहिए। जैसे आकाश अपने कारण से उत्पन्न होता है वैसी ही वायु भी अपने कारण से उत्पन्न होती है, वह अविकारी तत्त्व नहीं है। सांख्य दर्शन में वायु का कारण तत्त्व 'स्पर्श तन्मात्र' है। सृष्टि–रचना की प्रक्रिया में सबसे पहला पदार्थ वायु है। जिसका स्पर्श द्वारा अनुभव किया जा सकता है।

यह निश्चय हो जाने पर कि वायु भी उत्पन्न होने वाला पदार्थ है। शास्त्र में उसे जो अमृत या अविनाशी कहा है, वह गौण है। उसका अभिप्राय उसे चिरस्थायी बताना है।

शिष्य फिर प्रश्न करता है कि जिस प्रकार आकाश और वायु उत्पन्न होने वाले पदार्थ हैं, परन्तु शास्त्रों में इन्हें गौण रूप से नित्य भी कहा है। ये दोनों जिन कारण तत्त्वों से उत्पन्न होते हैं उन कारण तत्त्वों से उत्पन्न होते हैं उन कारण तत्त्वों को भी अन्य कारण तत्त्वों से उत्पन्न होने वाला क्यों न माना जाए? अथवा जैसे आकाश और वायु उत्पन्न होने वाले पदार्थ हैं वैसे ही जीवात्मा और परमात्मा (ब्रह्म) को भी उत्पन्न होने वाला क्यों न मान लिया जाए? सूत्रकार अगले सूत्र में इसका समाधान करते हैं।

– डॉ. भारत भूषण 'विद्यालंकार'
सी–2ए/90 जनकपुरी, नई दिल्ली–58

वेद-ज्ञान का आविर्भाव, किससे कब व कैसे?

भारत में सृष्टि के आरंभ से चली आ रही ऋषि परम्परा में वेद को ईश्वरीय ज्ञान माना गया है। ऋषि के बारे में तथ्य जानने योग्य है कि किसी भी वेद मन्त्र अथवा कुछ मन्त्रों के विषयों (मन्त्रों के देवता) के साक्षात्कारर्त्ता को ऋषि कहते हैं। उन वेद मन्त्रों में निहित विषय का ऐसा ज्ञान जसा कि किसी वैज्ञानिक को भौतिक व रसायन विज्ञान संबंधी होता है तथा जिसे वह प्रयोगशाला में सिद्ध करता है। हमारे ऋषि मुनि किसी भी बात को यूँ ही बिना प्रमाण के कहने व मानने के आदि नहीं थे। प्रमाणों व प्रयोगों से उसकी पुष्टि व सृष्टिक्रम के अनुकूल होना उस नियम, मान्यता व सिद्धात के लिए अनिवार्य होता था जिसको वह कहते अथवा प्रतिपादित करते थे। ऋषियों ने यह कह कर ही इतिश्री कर ली अपितु इस संबंध में हर पहलू पर अपने तर्क संगत विचार दिए हैं जिनको एक बार जान लेना उचित है।

इससे पूर्व की हम वेद विषयक ऋषियों के विचार व मान्यताओं को प्रस्तुत करें यह जान लेना आवश्यक है कि लगभग 5000 हजार वर्ष पूर्व हुए विनाशकारी महाभारत युद्ध में हमारे क्षत्रिय योद्धाओं के साथ हमारे ऋषि–मुनि, ज्ञानी भी बड़ी संख्या में दिवंगत हो गये। युद्ध के पश्चात देश में सर्वत्र अव्यवस्था ने अपने पैर जमा लिये। गुरुकुल एवं शिक्षा संस्थायें या तो बन्द हो गये थे अथवा माता–पिताओं द्वारा अपनी सन्तानों को गुरुकुलों में न भेजने के कारण उनको बन्द करना पड़ा। गुरुकुलों की व्यवस्था हेतु जिस साधनों से अर्थ की उपलब्धि की जाती थी वह भी बाधित हो गये। ऐसी स्थित में बचे हुए ब्राह्मण=शिक्षक= अध्यापक वर्ग ने भी अध्ययन–अध्यापन में किये जाने वाले तप वे परिश्रम की बोझिल जान उसे छोड़ कर आलस्य एवं विलासिता के मार्ग का आश्रय लिया और इसकी पूर्ति के लिए वेद विरुद्ध मान्यताओं को वेद के नाम पर प्रचलित कर दिया जिससे समाज में उनका वर्चस्व बना रहे। आगे के युग में हम देखते हैं कि वेद के नाम पर ही भारत में मूर्तिपूजा, मृतक श्राद्ध, अस्पृश्यता, सतीप्रथा, बाल विवाह को शास्त्र सम्मत मान लिया गया। विधवा विवाह को शास्त्र विरुद्ध घोषित किया गया। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय एवं सामाजिक दृष्टि से अत्यन्त हानिकारक जन्म पर आधारित जाति व्यवस्था आरम्भ हो गई। इस जन्म पर आधारित जाति व्यवस्था से पूर्व वेदों के आधार पर वर्ण–व्यवस्था प्रचलित थी जिसमें ब्राह्मण वही बन सकता था जो गुरुकुल में रहकर विद्याध्ययन कर वेदों एवं शास्त्रीय ज्ञान में श्रेष्ठता प्राप्त करें एवं प्रतिज्ञा कर के वह निःस्वार्थ भाव से जीवन भर अज्ञान का नाश एवं ज्ञान = विद्या का प्रचार करेगा। इस व्यवस्था में कभी–कभी ब्राह्मण का पुत्र ब्राह्मण न बनकर गुरुकुल के आचार्य द्वारा उसकी योग्यता के अनुसार क्षत्रिय अथवा वैश्य बना दिया जाता था। यह स्वाभाविक था कि महाभारत के पश्चात् के हमारे ब्राह्मण वर्ण के लोगों में वर्ण परिवर्तन की इस वैदिक वर्ण व्यवस्था के प्रति निराशा आ गई जिसे उन्होंने अवसर मिलने पर जन्म पर आधारित जाति व्यवस्था में बदल दिया। जन्म पर आधारित व्यवस्था के प्रचलन का एक कारण यह भी रहा कि गुरुकुलीय व्यवस्था समाप्त हो गई थी इसलिए वर्ण का निर्धारण किया जाना कठिन था। उपर्युक्त मूर्तिपूजा आदि अज्ञानमूलक विचारों के धर्म के नाम पर प्रचलित कर दिये जाने के कारण कालान्तर में लोग वेद के वास्तविक अभिप्रायः को पूर्णतः भूल गये अब लगभग 2500 वर्ष पूर्व गौतम बुद्ध के काल में वेदों के नाम पर ही यज्ञों में पशु बलि भी दी जाने लगी थी।

इस प्रकार दिन–प्रतिदिन अन्धकार बढ़ता ही गया और इसके प्रभाव से नाना प्रकार के मत–मतान्तर उत्पन्न हो गये जो अपने–अपने को सत्य व अन्यों को असत्य बताने लगे। वेद के ईश्वर मूलक होने को भूला दिया गया और ऐसा कोई तेजस्वी ज्ञानी सामने नहीं आया जो इन सबका विरोध करता। जिस प्रकार सूर्यास्त के बाद रात्रि व्याप्त होकर मनुष्य को निद्रा में ले जाती है इसी प्रकार हमारा राष्ट्र भी निन्द्रा अवस्था में ऐसा सोया कि उठना ही याद न रहा। ईश्वर की कृपा और देश एवं आर्य–हिन्दुओं के सौभाग्य से उन्नीसवीं शताब्दी में महर्षि दयानन्द सरस्वती का आर्विभाव हुआ। उन्होंने देश भर में घूम–घूम कर एक एक ज्ञानी की तलाश की और उनसे ईश्वर के अस्तित्व व इससे जुड़े प्रश्न किये और उनके उत्तारों की समीक्षा करते रहे। ऐसा करते हुए और साथ में योगियों से ईश्वर के साक्षात्कार की विद्या = योग को सीखते हुए वह 36 वर्षों के हो गये और फिर एक योगी से पता मिलने पर अपनी विद्या की बची हुई प्यास व क्षुधा को शान्त करने के लए प्रज्ञाचक्षु गुरु विरजानन्द सरस्वती के पास मथुरा पहुँचे। ढाई वर्षों तक मथुरा में गुरु के सान्निध्य में आर्ष व्याकरण को पड़ा और गुरु से ईश्वर व वेद तथा राष्ट्रहित की शिक्षा प्राप्त कर गुरु की आज्ञानुसार विश्व से अज्ञान मिटाने के लिए वेदज्ञानरूपी अस्त्र को लेकर जन–जन के पास जाकर अलख जगाई।

महाभारत काल में जैमिनी पर टूटी ऋषि परम्परा स्वामी दयानन्द से ही आरम्भ हुई। भारतीय जन अपनी अंधकारयुक्त बुद्धि के कारण उनकी देश व संसार के उपकार की सदाशयता को समझ नहीं पाये और कहीं अज्ञानतावश और कहीं स्वार्थवश उनको अपना शत्रु समझा गया। ऐसी स्थिति में भी महर्षि दयानन्द ने हमे महाभारत काल में एवं पश्चात् माध्यकाल के समय नष्ट हो गए। वैदिक ज्ञान का काफी बड़ा भाग उपलब्ध कराया गया जिसे विमल बुद्धि के विद्वान पुरुष ही जान व समझ सकते हैं। महर्षि दयानन्द से जो ज्ञानराशि प्राप्त हुई है उससे इस पृथिवी लोक पर सर्वप्रथम ज्ञान के प्रादुर्भाव के बारे में जाना जा सकता हैं। अपनी एतद्विषयक मान्यताओं एवं उनके द्वारा उपलब्ध कराये गये शास्त्रीय प्रमाणों के बुद्धिसंगत एवं सृष्टिक्रम के अनुकूल होने के कारण प्रत्येक ज्ञानवान मनुष्य के लिए यह मान्यताएँ पूर्णरूप में स्वीकार्य हैं। इस बारे में यह आवश्यकता है कि सृष्टि की आरम्भिक अवस्था में चले और देखे कि हमारे आदि–पूर्वजों में ज्ञान की क्या स्थिति थी।

यह सुनिश्चित सिद्धांत है कि मनुष्य किसी के सिखाये बिना कुछ नहीं सीख सकता। आज संसार में जितने भी ज्ञानी हैं उन्होंने वह ज्ञान अपने गुरु, माता–पिता, पुस्तकों के स्वाध्याय अथवा अध्ययन, चिन्तन–मनन, ऊहा–पोह वह इस प्रकार के प्रयत्नों से प्राप्त किया। इसी प्रकार इनसे पूर्व, पुनः उनसे पूर्व, उनसे भी पूर्व चलते हुए हम सृष्टि के आरम्भ में पहुँचते हैं तो हमें पता चलता है कि सृष्टि की आदि में बिना माता–पिता के सन्तानों का जन्म हुआ क्योंकि सृष्टि बनने के पश्चात् जो पहले मनुष्य बने उन्हे जन्म देने वाले माता–पिता नहीं थे। इन नये मनुष्यों के माता–पिता न होने के कारण वह कोई भी भाषा बोल नहीं सकते थो क्योंकि उसके लिए माता–पिता का होना आवश्यक होता है जो बच्चों को भाषा सिखाते हैं। गुरु व आचार्य अथवा अध्यापकों का भी उस काल में सर्वथा अभाव था। ऐसी स्थिति में उन नये मनुष्यों, स्त्री–पुरुषों को यदि मान लें कि किसी अज्ञात सत्ता से ज्ञान नहीं मिला तो समस्या यह है कि क्या धीरे–धीरे वह ज्ञान व भाषा का सृजन कर सकते थे? हमारे विद्वान, चिन्तक एवं विचारकों ने पर्याप्त ऊहा–पोह कर यह निश्चय किया है कि मनुष्य में अपने प्रयत्नों से भाषा को उत्पन्न करने अथवा बनाने की सामर्थ्य नहीं है। भाषा के लिए संज्ञाओं एवं क्रियाओं के ज्ञान का होना आवश्यक है। यदि यह ज्ञान नहीं है तो भाषा बन ही नहीं सकती। आदि मनुष्य क्योंकि कोई भाषा नहीं जानते थे तो संज्ञाओं व क्रियाओं का निर्धारण, उन्हें जानना, समझना एवं इसके लिए नियम बनाना कदापि सम्भव नहीं है। यहाँ तो एक समस्या यह भी उत्पन्न होती है कि वह मनुष्य बिना भाषा के जीवित भी रह पायेगें। कारण कि भूख व प्यास लगने पर उसकी पूर्ति के लिए जो प्रयत्न किये जाते हैं उनके लिए भी भाषा का होना अनिवार्य है। ऐसी स्थिति में तो वह अधिक से अधिक घास–पत्ते–वनस्पतियों जो भी सामने होंगी उनसे ही निर्वाह करेगा और यदि किसी कारण वहाँ जल दिखाई नहीं देता तो प्यास से मर भी सकता है क्योंकि उस समय उसे यह ज्ञान नहीं है कि प्यास के लिए जल पीना है।

पत्ते व वनस्पतियों से यदि वह जीवत रह भी लें तो भी उनके द्वारा भाषा की उत्पत्ति संभव नहीं है। इस कारण भारतीय मनीषी मानते आये हैं कि यदि आदि मनुष्यों को किसी अन्य सत्ता, जो कि चेतन व ज्ञानवान हो, के द्वारा भाषा न दी गई होती तो आज तक मनुष्य भाषा से विहीन ही रहते और ज्ञान व विज्ञान का प्रश्न ही नहीं होता। अतः यह सिद्ध है कि सृष्टि के आदि में एक चेतन व ज्ञानवान सत्ता थी जिससे मनुष्यों ने भाष्य व ज्ञान को प्राप्त किया और कालान्तर में प्रयत्न करते हुए व अन्य कारणों से अनेक भाषाएं बनीं और ज्ञान की विभिन्न शाखाओं में उन्नति करते हुए आज की स्थिति प्राप्त हुई है। इसी ज्ञानवान सत्ता से ब्रह्माण्ड बना है और इसका संचालन हो रहा है। जो वैज्ञानिक नियम इस ब्रह्माण्ड में कार्य कर रहे हैं जिनका अनुसंधान कर वैज्ञानिक नये–नये आविष्कार करते हैं वह सारा ज्ञान, सृष्टि व ब्रह्माण्ड की रचना करने के कारण, उस चेतन ज्ञानवान सत्ता को सृष्टि बनने से पूर्व से है। इन गुणों के कारण ही उस सत्ता का सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, सर्वदेशी विशेषणों से अभिहित किया गया है। यदि यह सत्ता यथार्थ में है तो उसका ज्ञान, अनुभव व साक्षात्कार भी होना चाहिए। यह कार्य योग के क्षेत्र में आता है एवं वेदों एवं योगदर्शन में इसका विस्तार से वर्णन एवं क्रियात्मक रूप से उसके अनुभव व प्राप्ति का उल्लेख है।

– **शेष अगले अंक में**

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 125वें निर्वाण वर्ष पर

नियोजित एक वर्षीय कार्ययोजना के अन्तर्गत

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का ऐतिहासिक सम्मेलन सम्पन्न

महर्षि दयानन्द के 125वें निर्वाण वर्ष के उपलक्ष्य में दिनांक 30, 31 अक्टूबर व 1 नवम्बर को आयोजित महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का ऐतिहासिक सम्मेलन सम्पन्न हुआ। सम्मेलन हेतु निर्मित संभाजी नगर, औरंगावाद का विशाल पांडाल अपनी सुन्दरता से जहाँ आकर्षित कर रहा था, वहीं सुन्दर यज्ञ वेदी व अन्य व्यवस्थाएं सम्मेलन की सफलता दर्शा रही थीं।

सम्मेलन में चारों वेदों के सस्वर पाठ करने वाले पंडितों की उपस्थिति व अलग–अलग पाठ विधि ने सबको आनन्दित कर दिया।

ध्वजारोहण महापौर विजया किशोर रहाटकर द्वारा किया गया इस अवसर पर सभा मन्त्री श्री प्रकाश आर्य, सभा अध्यक्ष स्वामी श्रद्धानन्द उपस्थित थे। ध्वजारोहण के पश्चात प्रति–दिन यज्ञ व मुख्य पाण्डाल से अनेक सम्मेलनों का आयोजन किया गया। देश के अनेक विद्वान और आर्य नेता वहाँ पर उपस्थित थे। डॉ0 महावीर जी गुरुकुल कांगडी डॉ0 धर्मेन्द शास्त्री, व ब्र0 राजसिंह आर्य (दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा) डॉ0 सत्यपाल सिंह जी, श्री विनय आर्य (दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा), डॉ0 ब्रह्ममुनि काले, पूर्व केन्द्रीय मंत्री जय सिंह गायकवाड, श्री राजेन्द्र विद्यालंकार, सत्यवीर शास्त्री (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा विदर्भ) आदि उपस्थित थे। यज्ञ की ब्रह्मा आचार्या नंदिता जी शास्त्री वाराणसी के साथ–साथ मन्त्र पाठ हेतु कन्याएं भी बनारस से आयी थीं। महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.) भी कार्यक्रम में उपस्थित हुए तथा नगर में निकाली गई शोभा यात्रा में पूरे समय सम्मिलित हुए। पूरे नगर वासी आपको देखने के लिए उमड़ पड़े। शोभा यात्रा भी काफी लम्बी व आकर्षक थी। कार्यक्रम की सबसे बड़ी उपलब्धि थी। 9 आर्यजनों के द्वारा वानप्रस्थ दीक्षा प्राप्त की गई। सम्मेलन के प्रमुख संचालक श्री दयानन्द वर्से थे, जिनका बड़ा प्रभावी व सफल संचालन कार्यक्रम की शोभा बन गया।

सम्मेलन में आगन्तुक हजारों की संख्या में आर्यजन अत्यन्त उत्साही और संगठन के प्रति समर्पित दिखाई दिए। सम्मेलन को सभी अभूतपूर्व बता रहे थे। सभी ने महर्षि के कार्य को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया। आर्यसमाज में एक मिशनरी बनकर सतत् कार्य करने की प्रतिज्ञा की।

सभा की ओर से अनेक विद्वानों, आर्यनेताओं और कार्यकर्त्ताओं का स्वागत किया गया। इस सफल आयोजन हेतु सार्वदेशिक सभा की ओर से श्री दयाराम, संयोजक, डॉ0 ब्रह्ममुनि जी, स्वागताध्यक्ष, श्री प्रकाश आर्य का स्वागत किया गया व सार्वदेशिक सभा की ओर से धन्यवाद किया गया।

– प्रकाश आर्य,
मन्त्री, सार्वदेशिक सभा

निर्वाण वर्ष की स्मृति घड़ियां

महर्षि दयानन्द सरस्वती के 125वें निर्वाण वर्ष की स्मृति हेतु तैयार घड़ियां चार आकारों में तैयार कराई गई हैं। सुन्दर, आकर्षक डिजाइन एवं गोल्डन कलर में महर्षि दयानन्द के चित्र के साथ तैयार ये घड़ियां मात्र 100/– में बड़े आकार में तथा 75/– रुपये में छोटी उपलब्ध हैं। इसके अलावा आर्यसमाजों के सत्संग हॉल में लगाने के लिए सुपर बड़ी घड़ी 300/– रुपये मात्र में उपलब्ध हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के 125वें निर्वाण वर्ष पर

आर्यसमाज के प्रचार–प्रसार के लिए, युवाओं को साथ जोड़ने के लिए, देश और समाज में पुनः वैदिक मान्यताओं के प्रचार के लिए, देश–भक्त और महर्षि मिशन के सिपाही तैयार करने के लिए, भारतीय जनमानस को पुनः झकझोरने के लिए विशेष रूप से तैयार की गई फिल्म :–

"सत्य की राह" वीसीडी
केवल 25/– रुपये में

अपने बच्चों को अवश्य दिखाएं, भेंट तथा उपहार में देवें। आओ हम सब मिलकर महर्षि के सपनों का भारत बनाने में सहयोग करें। आओ हम सब देशभक्त बनकर पुनः विश्वगुरु भारत का सृजन करें।

आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं, दैनिक हवन कर्ताओं के लिए खुशखबरी

MDH हवन सामग्री

अब सभा कार्यालय में भी उपलब्ध

अनेक जड़ीबूटियों व औषधियों से तैयार सुगन्धित हवन सामग्री अब दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा – 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली–1 में 5, 10 एवं 20 किलो के पैकेटों में उपलब्ध है। आर्यसमाजें अपनी आवश्यकतानुसार मंगाएं और विशुद्ध हवन सामग्री से यज्ञ करके वातावरण को सुगन्धि प्रदान करें।

5 किलो - 250 रुपये तथा 10 किलो - 490 रुपये

डाक/ट्रांसपोर्ट से मंगाने पर डाक व्यय अलग से देय होगा।

– संयोजक, विक्रय विभाग

आर्य संस्थाएं इतिहास लेखन हेतु जानकारियां भेजें

1. अपनी आर्यसमाज की स्थापना के सम्बन्ध में 10–15 पंक्तियां लिखें जिसमें उस समय के क्षेत्र की परिस्थितियां, किन के घर से आरम्भ हुआ, किन्होंने किया, आदि का भी उल्लेख हो।
2. आर्यसमाज की स्थापना की तिथि, संस्थापकों के नाम एवं परिचय सहित – यथासम्भव रिकार्ड के अनुसार हो तो बेहतर है।
3. आर्यसमाज के वर्तमान भवन के बृहद् तीन–चार चित्र अलग–अलग कोण से खींचकर भेजें जिसमें आर्यसमाज का नामपट्ट लिखा हिस्सा आ जाए, तो बेहतर है। (चित्र सीडी में भी भेजें)
4. आर्यसमाज द्वारा वर्तमान में संचालित समस्त गतिविधियों की जानकारी।
5. स्थापना से अब तक किए गए मुख्य कार्यों का विवरण।
6. वर्तमान के तीन पदाधिकारियों (प्रधान, मन्त्री एवं कोषाध्यक्ष) के नाम व फोटोग्राफ एवं महिला आर्यसमाज के भी उपरोक्त तीन पदाधिकारियों के फोटोग्राफ। (फोटो सीडी में भी भेजें) प्रत्येक फोटोग्राफ के पीछे उनका नाम अवश्य लिखा हो।
7. स्थापना काल से अब तक रहे अधिकारियों की सूची कार्यकाल सहित (यदि सम्भव हो तो)
8. वे कार्य जिनसे आपकी आर्यसमाज ने विशेषता प्राप्त की हों।
9. यदि कोई महान् व्यक्तित्व आपकी आर्यसमाज से सम्बन्धित रहे हों तो उनका विवरण परिचय अवश्य दें।
10. आर्यसमाज से सम्बन्धित कोई ऐसा ऐतिहासिक दस्तावेज जिसकी फोटोप्रति छापना इतिहास की दृष्टि से आप उत्तम समझें तो उसकी सॉफ्ट कॉपी करके अवश्य भेजें।

नोट: इन सबके अतिरिक्त अपनी आर्यसमाज के बारे में कुछ विशेष जानकारी/टिप्पणी देना चाहें तो उसे भी अलग से अवश्य ही दे देवें।

विशेष नोट: 1. इतिहास ग्रन्थ में प्रत्येक आर्यसमाज के विवरण के लिए दो पृष्ठ आरक्षित होंगे। जिसमें आधे पृष्ठ पर फोटो तथा शेष डेढ़ पृष्ठ पर आर्यसमाज का उपरोक्त वर्णन सम्पादित कर प्रकाशित किया जाएगा। 2. यदि समाज 50 वर्ष से अधिक पुराना है, वह चाहे तो अतिरिक्त शुल्क 750/– रुपये देकर तीसरा पृष्ठ भी ले सकते हैं। 3. ग्रन्थ का आकार 20×30×8 होगा। फोटो रंगीन प्रकाशित होंगे। इतिहास लेखन समिति ने प्रत्येक आर्यसमाज को 1000/– रुपये प्रति पृष्ठ की दर से शुल्क निर्धारित किया है। यह ग्रन्थ लगभग 700–800 पृष्ठों का होगा तथा दो भागों में प्रकाशित होगा। दोनों भागों का अनुमानित मूल्य 250/– रुपये होगा। यह ग्रन्थ आर्यसमाजों के इतिहास लेखन की दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण सिद्ध होगा। 4. इस ग्रन्थ में जानकारी भेजने वाली प्रत्येक आर्यसमाज/संस्था को ग्रन्थ की 5 प्रतियां निःशुल्क दी जाएंगी। 5. अपने पत्र एवं जानकारियां **'संयोजक, दिल्ली आर्यसमाज इतिहास लेखन समिति'** – 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली–1 के पते पर शीघ्रातिशीघ्र 31 दिसम्बर, 2009 से पूर्व भेज देवें।

– ब्र. राजसिंह आर्य, प्रधान
विनय आर्य, महामन्त्री (9958174441)

महिमा आर्यसमाज की

आज बताता हूँ मैं तुमको,
महिमा आर्यसमाज की।
पावन पुण्य–पताका है ये,
दयानन्द ऋषिराज की।।

इस्लामी अंग्रेजी झंझावातों से,
जब भारत जूझ रहा।
ले ईश्वर का नाम मूर्खतावश,
पत्थर को पूज रहा।।
कैसे रहूँ, किधर को जाऊँ,
नहीं किसी को सूझ रहा।
पढ़ा–लिखा जाकर अनपढ़ से,
निज भविष्य को बूझ रहा।।
हुई अपार दया ऐसे में,
स्वामी जी महाराज की..... आज....

गहन विचार किया ऋषिवर ने,
इस अनर्थ की मूल कहाँ?
विश्व–गुरु भारत कर बैठा,
महाभयंकर भूल कहाँ।।
भूमण्डल–सम्राट् बन गया,
क्यों इनकी पगधूल यहाँ।
सत्य धर्म और सदाचार की,
परिभाषा प्रतिकूल यहाँ।।
घोर अविद्या, पराधीनता,
बात कोढ़ में खाज की... आज....

देखा ऋषि ने वेदहीनता,
दुर्गतियों का कारण है।
शिक्षित और सुधारक जन भी,
शासक का ही चारण है।।
भारत के इन अघ रोगों का,
करना मुझे निवारण है।
तपः साधना द्वारा करके,
दिव्य तेज को धारण है।
ऋषिवर ने धज्जियाँ उड़ा दीं,
हर एक बुरे रिवाज की ... आज...

सर्वजयी योद्धा बन कर,
सब जीवन भर संग्राम किया।
चिन्तन–धारा में परिवर्तन,
लाने वाला काम किया।।
प्रबल प्रवाह पतन पथ पर था,
पुरुषार्थ से थाम लिया।
वैचारिक संक्रांति ने ही,
स्वतन्त्रता परिणाम दिया।।
ऋषिवर से ही हमें मिली थी,
परिकल्पना स्वराज की.... आज...

सब जग के उपकार हेतु,
प्यारे ऋषि का आह्वान है ये।
दयानन्द के दिव्य ध्येय की,
पूर्ति का अभियान है ये।।
श्रद्धा–तर्क समन्वय वाला,
वेद धर्म विज्ञान है ये।
सत्य कहें तो मानवता को,
ईश्वर का वरदान है।।
रक्षक है 'गुणग्राहक' ये,
भारतमाता की लाज की.. आज....

– रामनिवास 'गुणग्राहक'
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

महर्षि दयानन्द सरस्वती
जीवन चरित्र, घटनाओं तथा ग्रन्थों की जानकारी के लिए लॉगऑन करें
www.swamidayanand.com

संस्कार प्रशिक्षण विद्यालय

घर पर शास्त्रों का स्वाध्याय करने के बाद यज्ञोपवीत, विवाह, अन्येष्टि आदि 16 संस्कारों एवं यज्ञ करने–कराने की व्यवहारिक शिक्षा तथा परीक्षोत्तीर्ण संस्कार शास्त्री की उपाधि। सत्य और असत्य को विचार करके गुरुडम, अंधविश्वास एवं अधर्म से अपने को तथा समाज को बचाकर शास्त्री (पुरोहित) बनकर समाज का नेतृत्व करें।

पाठ्यक्रम निम्न पते पर 10 रुपये भेजकर मंगा सकते हैं। सम्पर्क करें –

– बनारसी सिंह 'विजय',
अध्यक्ष, ***शिवाजी पथ, यारपुर,***
पटना– 800001 (बिहार)
मो. 9835060463

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी के
नाम पर पार्क का नामकरण

आदर्श कर्मयोगी स्वामी श्रद्धानन्द देश की महान विभूति थे, जिन्होंने चांदनी चौक दिल्ली में अंग्रेजों के समक्ष सीना खोलकर 'हिम्मत है तो चलाओ गोली' का सिंहनाद किया था। जिसके चलते निर्भीक संन्यासी के आगे अंग्रेज सरकार को झुकना पड़ा।' ये उद्गार विधायक श्री श्यामलाल गर्ग ने ऋषि नगर रानीबाग में आयोजित स्वामी श्रद्धानन्द पार्क के नामकरण एवं सौन्दर्यकरण समारोह में कहे। इस अवसर पर दिल्ली नगर निगम रोहिणी जोन के चेयरमैन श्री सुरेश भारद्वाज एवं उपायुक्त श्री वी. के. गुप्ता भी उपस्थित थे।

कार्यक्रम का शुभारम्भ आचार्य आनन्द प्रकाश जी के ब्रह्मत्व में आयोजित यज्ञ से हुआ। इस अवसर पर माता प्रेमलता शास्त्री मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थी। उन्होंने कहा निगम पार्षद श्री सुदेश भसीन के अथक प्रयासों से यह पार्क बना है। देश के शहीदों के नाम पर सड़कों व पार्कों के नामकरण करने से युवा पीढ़ी में देशप्रेम जागृत होगा।

सैंकड़ो क्षेत्रीय महानुभावों के साथ–साथ सर्वश्री भजनप्रकाश आर्य, जोगेन्द्र खट्टर, सुनील गुप्ता, पार्षद रेखा गुप्ता भी समारोह की शोभा को बढ़ाया। *– चन्द्रमोहन आर्य, पत्रकार*

आर्यसमाज कृष्ण नगर, दिल्ली का
वेद प्रचार सप्ताह
23 से 29 नवम्बर, 09
समापन समारोह 29 नवम्बर, 09

यज्ञ : प्रातः 7.30 से 9 बजे
ब्रह्मा : श्री उयभानु शास्त्री
भजन : धूमसिंह शास्त्री
प्रवचन : डॉ. महेश विद्यालंकार
आचार्य वीरेन्द्र विक्रम
ऋषि लंगर : दोपहर 1.30 बजे से

सभी आर्यजन सपरिवार कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं।

– जगदीश राज मल्होत्रा, प्रधान
विजय कुमार पसरीचा, मन्त्री

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय में उपलब्ध वैदिक साहित्य एवं प्रचार सामग्री

क्र.सं.	नाम वस्तु	मूल्य
1.	ओ३म् ध्वज (छोटा 1'×1.5')	10/–
2.	ओ३म् ध्वज (मध्यम 1.5'×2')	20/–
3.	ओ३म् ध्वज (बड़ा 2'×3')	50/–
4.	ओ३म् ध्वज (फैंसी – छोटा 1'×1.5')	50/–
5.	ओ३म् ध्वज (फैंसी – बड़ा 2'×3')	100/–
6.	दैनिक यज्ञ गुटका	400/– सैकड़ा
7.	घड़ी (सुपर)	300/–
8.	घड़ी (बड़ी)	100/–
9.	घड़ी (छोटी)	75/–
10.	लाइट आफ टूथ (अंग्रेजी सत्यार्थ प्रकाश)	250/–
11.	सत्यार्थ प्रकाश	25/–
12.	सत्यार्थ प्रकाश (सजिल्द)	50/–
13.	श्रीमद्दयानन्द प्रकाश	125/–
14.	चांदी के सिक्के (10ग्रा.)	बाजार रेट पर
15.	सत्य की राह (वीसीडी)	25/–
16.	सत्यार्थ प्रकाश (डीवीडी)	15/–
17.	ऋषि गाथा (सीडी)	25/–
18.	गुरुदेव दयानन्द (सीडी)	20/–
19.	महर्षि दयानन्द फ्रेम्ड चित्र (बड़ा साइज)	5500/–
20.	महर्षि दयानन्द फ्रेम्ड चित्र (मध्यम)	2500/–
21.	महर्षि दयानन्द फ्रेम्ड चित्र (छोटा)	1000/–
22.	महर्षि दयानन्द फ्रेम्ड चित्र (10'' ×12'')	350/–
23.	महर्षि दयानन्द फ्रेम्ड चित्र (10'' ×12'')	250/–
24.	महर्षि दयानन्द के लेमिनेटिड चित्र (बड़ा)	125/–
25.	महर्षि दयानन्द के लेमिनेटिड चित्र (8''×10'')	40/–
26.	महर्षि दयानन्द के लेमिनेटिड चित्र (5''×7'')	20/–
27.	महर्षि दयानन्द के लेमिनेटिड चित्र (3''×5'')	15/–
28.	नेम स्लिप्स (18×1)	5/–
29.	शगुन लिफाफे	200/– सैकड़ा
30.	स्टीकर (125 निर्वाण वर्ष)	300/– सैकड़ा
31.	स्कूटर स्टेपनी कवर	10/–
32.	125वां निर्वाण वर्ष बैनर	10/–
33.	ओ३म् स्टीकर (छोटा)	150/– सैकड़ा
34.	ओ३म् स्टीकर (बड़ा)	5/–
35.	गायत्री मन्त्र स्टीकर	50/–
36.	वेद ईश्वरीय ज्ञान (लघु ट्रैक्ट)	250/– सैकड़ा
37.	आर्योद्देश्य रत्नमाला (लघु ट्रैक्ट)	250/– सैकड़ा
38.	यज्ञोपवीत	25/– बंडल
39.	वेदों का सैट (14 खंडों में)	1500/–
40.	वेदों का सैट (अंग्रेजी :22 खंडों में)	2000/–
41.	वेदों का सैट (हिन्दी 4 खंडों में)	1500/–

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में सभा कार्यालय स्थित के प्रचार स्टाल पर पधारें और उपलब्ध सेवाओं का लाभ उठाएं। डाक पार्सल, वीपीपी/ट्रांस्पोर्ट से मंगाने के लिए राशि अग्रिम भेजनी होगी। डाक–व्यय, पैकिंग शुल्क, बिल्टी आदि का व्यय अतिरिक्त देय होगा।

– विनय आर्य, महामन्त्री, 9958174441

महर्षि दयानन्द सरस्वती के 125वें निर्वाण वर्ष पर
स्वामी सत्यानन्दकृत महर्षि दयानन्द जीवनी
श्रीमद्दयानन्द प्रकाश
रु. ~~200~~ मात्र 125/-रु०
सुन्दर कम्पोजिंग, आकर्षक रंगीन कवर, बड़ा साईज 450 पृष्ठों में यह छूट महर्षि निर्वाणोत्सव (दीपावली) तक ही मान्य होगी।

श्रीमद्दयानन्द–वेदार्ष–महाविद्यालय 119, गौतमनगर, नई दिल्ली का

67वां वार्षिकोत्सव एवं 30वां चतुर्वेद ब्रह्मपारायण यज्ञ

15 नवम्बर, 2009 से 6 दिसम्बर, 2009

यज्ञ : प्रतिदिन प्रातः 7 से 10 बजे सायं 3 से 6 बजे
ब्रह्मा : प्रो0 धर्मवीर जी (अजमेर)
ऋग्वेद पारायणयज्ञ : 15–24 नवम्बर यजुर्वेद पारायणयज्ञ : 25–27 नवम्बर
सामवेद पारायणयज्ञ : 27–28 नवम्बर अथर्वेद पारायण यज्ञ : 29–6 दिसम्बर

स्मृति सम्मेलन : 29 नवम्बर सायं 4 से 6.30 बजे

स्मरणीय : स्वामी सच्चिदानन्द योगी, पं. क्षितिज वेदालंकार, स्वामी ओमानन्द सरस्वती, स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती।

आर्य महिला सम्मेलन : 1 दिसम्बर, 09 दोपहर 2 से 4 बजे

अध्यक्षा : माता शकुन्तला आर्या संयोजिका : श्रीमती शशि प्रभा आर्या

गुरुकुल सम्मेलन : 5 दिसम्बर, 09 सायं 4 से 6.30 बजे

अध्यक्ष : स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती संयोजक : डॉ. सूर्यनारायण नन्द

यज्ञ पूर्णाहुति, आर्यनेताओं के उद्बोधन एवं आशीर्वाद
6 दिसम्बर, 09 प्रातः 8 बजे से 1.30 बजे

अध्यक्ष : डॉ. अशोक कुमार चौहान, संस्थापक, एमिटी शिक्षण संस्थान
आशीर्वाद : स्वामी धर्मेश्वरानन्द, स्वामी सम्पूर्णानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, डॉ. रघुवीर वेदालंकार, आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय एवं पं. ओमप्रकाश वर्मा।
ऋषि लंगर : दोपहर 1 से 3 बजे तक

आप सब कार्यक्रमानुसार अधिकाधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं। — **स्वामी प्रणवानन्द, आचार्य**

आर्य समाज सान्ताकुजं मुम्बई का

66वाँ स्थापना दिवस एवं पुरस्कार समारोह सम्पन्न

रविवार 1 नवम्बर 2008 को 66वाँ आर्य समाज सान्ताकुंज का स्थापना एवं पुरस्कार समारोह आर्य समाज के विशाल सभागृह में मनाया गया। सर्वप्रथम बृहद यज्ञ का आयोजन किया गया। तद्नन्तर प्रातः 9.00 बजे से श्री चन्द्रगुप्त आर्य जी वरिष्ठ प्रधान आर्य समाज सान्ताक्रुज की अध्यक्षता में स्थापना दिवस एवं पुरस्कार समारोह आरम्भ हुआ। तत्पश्चात मन्त्रोच्चारण एवं पुष्पवृष्टि के साथ अतिथि एवं पुरस्कार प्राप्तकर्त्ताओं का मंच पर आगमन हुआ।

इस वर्ष **श्री झाऊलाल शर्मा गुरुकुल सहायता पुरस्कार** – आर्ष ज्योति गुरुकुल आश्रम (छत्तीसगढ़), **श्रीमती भागीदेवी छाबरिया गुरुकुल सहायता पुरस्कार** – गार्गी कन्या गुरुकुल (अलीगढ), **श्री राजकुमार कोहली वयोवृद्ध विद्वान पुरस्कार** – पं. नरदेव स्नेंही (औरंगावाद), **श्रीमती कृष्णा गांधी आर्य युवक पुरस्कार** – आचार्य धनंजय शास्त्री जी (देहरादून), **श्रीमती प्रेमलता सहगल युवा महिला पुरस्कार** – आचार्या पुष्पांजलि शास्त्री जी (उड़ीसा), **पं. युधिष्ठर मीमांसक स्मृति पुरस्कार**– श्री आचार्य सत्य सिन्धु (होशंगाबाद), **श्री मेघजी भाई आर्य साहित्य पुरस्कार** – प्रो. कुशल देव शास्त्री (नान्देड़), **श्रीमती लीलावती महाशय आर्य महिला पुरस्कार** – कैप्टन भारती जाधव (औरंगाबाद) को प्रदान किए गए।

समारोह के अध्यक्ष श्री चन्द्रगुप्त आर्य जी ने आर्य समाज सान्ताकुज द्वारा संचालित पुरस्कार परम्परा की अत्यन्त प्रशंसा की। आपने आगे कहा कि आर्य समाज के कार्यो को यदि गति देना है तो वैदिक विद्वानों का सम्मान होना ही चाहिए। समस्त आगन्तुक विद्वानों एवं अतिथियों का सम्मान श्री चन्द्रगुप्त आर्य जी प्रधान आर्य समाज सान्ताक्रुज (एवं दानदाताओं के परिवारों) तथा समाज के अन्य पदाधिकारियों ने शाल, श्रीफल, मोती माला भेंट करके किया।

– संगीत आर्य, महामंत्री

चारों वेदों का सम्पूर्ण वेद-भाष्य

(हिन्दी 4 व 14 खण्डों एवं दो विभिन्न आकारों में) मात्र 1500/-रु०

(अंग्रेजी 22 खण्डों में) मात्र 2000/-रु०

महर्षि दयानन्द सरस्वती का अमर ग्रन्थ

सत्यार्थ-प्रकाश

प्राप्त करें मात्र 25/- में

(2500/- रुपये सैंकड़ा)

सुन्दर कम्पोजिंग, आकर्षक रंगीन कवर में प्रकाशित

आर्यसमाज प्रशान्त विहार, दिल्ली का

25वां वार्षिकोत्सव

समापन समारोह : 29 नवम्बर, 09
सार्वजनिक सभा: प्रातः 10 से 1 बजे

अध्यक्षता : श्री भजन प्रकाश आर्य
मुख्य वक्ता : आचार्य इन्द्रदेव जी
ऋषि लंगर : दोपहर 1बजे से

सभी आर्यजन सपरिवार कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं।

– दुर्गा प्रसाद कालड़ा, प्रधान
ओमप्रकाश भावल, मन्त्री

आर्यसमाज बिड़ला लाइन्स का

80वाँ वार्षिकोत्सव

समापन समारोह : 29 नवम्बर

समय : प्रातः9.30 से 1.30 बजे

सभी आर्यजन सपरिवार कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं।

– योगेश कुमार आर्य, प्रधान
नरेन्द्र आर्य, मन्त्री

आर्यसमाज कालकाजी, नई दिल्ली का

58वां वार्षिकोत्सव

29 नवम्बर से 6 दिसम्बर, 09

यजुर्वेद महायज्ञ : प्रातः 7 से 8.30बजे
ब्रह्मा : आचार्य रामकृष्ण शास्त्री
वेदपाठ : गुरुकुल गौतमनगर के ब्रह्मचारी
यज्ञोपदेश : स्वामी सम्पूर्णानन्द सरस्वती
भजन : पं. सत्यपाल पथिक
भजन–प्रवचन : रात्रि 7 से 9 बजे

पूर्णाहुति एवं समापन : 6 दिसम्बर
विशिष्ट सम्मेलनः प्रातः 10–1.30 बजे
विषय :राष्ट्र के प्रति आर्यसमाज की देन

मुख्यवक्ता : स्वामी सम्पूर्णानन्द सरस्वती
प्रीतिभोज : दोपहर 1.30 बजे

सभी आर्यजन सपरिवार कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं।

– धर्मपाल सिब्बल, प्रधान
रमेश गाडी, मन्त्री

शोक समाचार

माता कृष्णा रसवन्त का निधन

सुप्रसिद्ध आर्य नेत्री माता कृष्णा रसवन्त धर्मपत्नी श्री प्रियतमदास रसवन्त जी का दिनांक 23 नवम्बर को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ स्थानीय शमशान घाट पर किया गया।

माताजी अत्यन्त ही मृदुभाषी, दानशील, करुणामयी, आदर्श महिला थीं। आर्यवीर दल एवं आर्यसमाज के प्रत्येक कार्यक्रम में वे अवश्य उपस्थित होती थीं तथा यथासम्भव सहयोग करती थीं। उन्होंने आर्यसस्कारों को न केवल धारण किया अपितु अपने सम्पूर्ण परिजनों में प्रतिरोपित भी किया। इसी का परिणाम है कि आज उनका सम्पूर्ण परिवार आर्यसमाजी विचारधारा से दीक्षित है। उनके निधन से उनके परिवार एवं आर्यसमाज की जो क्षति हुई है उसकी पूर्ति होना कठिन है।

श्रीमती कौशल्या देवी चावला का निधन

आर्यसमाज लड्डूघाटी, पहाड़गंज के भूतपूर्व प्रधान श्री वीरभान चावला जी की धर्मपत्नी श्रीमती कौशल्या देवी जी का दिनांक 9 नवम्बर , 2009 को 77 वर्ष की आयु में निधन हो गया। वे एक चलती फिरती आर्यसमाज थीं। वे अपने पति के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर आर्यसमाज के कार्यक्रमों, उत्सवों एवं सम्मेलन में अवश्य भाग लेती थी। वे अतिथियों, संन्यासियों व विद्वानों का बड़ा सम्मान करती थीं। उनके निधन से आर्यसमाज एवं उनके पारिवारिक जनों की जो क्षति हुई है, उसकी पूर्ति होना कठिन है।

माता कर्मदेवी वलेचा दिवंगत

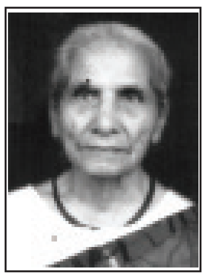

आर्यसमाज मयूर विहार–1 दिल्ली की कर्मठ सदस्या एवं श्री विद्याधर वलेचा की धर्मपत्नी श्रीमती कर्मदेवी वलेचा का दिनांक 15 नवम्बर, 2009 को 93 वर्ष की आयु में निधन हो गया। वे इस आयु में भी नियमित रूप से आर्यसमाज के सत्संगों में उपस्थित रहती थीं एवं शोभायात्राओ में अग्रणी होती थीं। आर्यसमाजी संस्कार उन्हें विरासत में मिले तथा उन्हीं संस्कारों को उन्होंने अपनी सन्तानों में रोपित किया। उन द्वारा प्रदान किए गए संस्कारों का ही परिणाम है कि उनके ज्येष्ठ कै. प्रेमकुमार आर्यसमाज के मन्त्री एवं उप प्रधान रहे हैं तथा सम्पूर्ण परिवार आर्यसमाजी विचारधारा से परिचित है। उनकी स्मृति में दिनांक 18 नवम्बर को श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पद्चिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें।

–सम्पादक

❖ साप्ताहिक आर्य सन्देश ❖

23 नवम्बर, 2009 से 29 नवम्बर, 2009

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१

दिल्ली पोस्टल रजि.नं० डी.एल.(एन.डी.)-११/६०७१/२००९-२०११
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने की दिनांक २६/२७-११-२००९
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू०(सी०) १३९/२००९-११
आर. एन. नं. ३२३८७/७७

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन

4 , 5, 6 दिसम्बर, 2009

स्थान : घनश्याम सिंह आर्य कन्या महाविद्यालय, दुर्ग (छत्तीसगढ़)

विश्व कल्याण महायज्ञ | विराट शोभायात्रा | भजनोपदेश
आर्यवीर शक्ति प्रदर्शन | वैदिक प्रवचन | परिचर्चाएं
एवं विविध सम्मेलन

आर्यजन आपना रेलवे आरक्षण करा लेवें तथा अधिकाधिक संख्या में इष्टमित्रों सहित भाग लेकर संगठन शक्ति का परिचय दें तथा सम्मेलन को सफल बनाने में अपना योगदान देवें।

–: निवेदक :–

आचार्य दयासागर – प्रधान (9425944843)
दीनानाथ वर्मा – मन्त्री (9826363578)
अरुण खोसला – का0मन्त्री (9893787852)

प्रतिष्ठा में,
श्री.........................

सामाजिक, धार्मिक व समसामयिक गतिविधियों का दर्पण

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

आप तक पहुंचाता है, देश-विदेश सहित दिल्ली एवं आसपास की आर्य संस्थाओं की समस्त जानकारियां।

आज ही सदस्यता प्राप्त करें

वार्षिक सदस्यता : 150/- आजीवन सदस्यता 750/-

नेमस्लिप्स

विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों को महर्षि दयानन्द जी के बारे में जानकारी देने तथा उन्हें आर्यसमाज की ओर आकर्षित करने की छोटी सी शुरुआत : कापी–किताबों पर चिपकाने के लिए नेमस्लिप्स। 18 स्लिप्स का एक सैट मात्र 5/– रुपये प्रति शीट।

शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित
छह सुन्दर डिजाइनों में
केवल मात्र 200/- रुपये सैंकड़ा

आर्यजन अधिक से अधिक संख्या में मंगाकर आर्यसमाज एवं वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार में सहयोगी बनें। आज ही अपने आर्डर भेजें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
की संगीतमय प्रस्तुति

"गुरुदेव दयानन्द"

ऑडियो सीडी
सुन्दर मधुर भजनों का
मनभावन संकलन
केवल 20/- रुपये में

पैकिंग एवं डाक व्यय पृथक से देय होगा।

–: प्राप्ति स्थान :–

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली–1
दूरभाष: 23360150, 23365959

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र० राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, 1488 पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली-2 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान रोड नई दिल्ली-१; फोन : २३३६०१५०; टैलीफैक्स २३३६५९५९; E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र० राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : सुशील महाजन सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर